• ऐसे में जनमानस में वैज्ञानिक अभिगम (scientific temper) कैसे विकसित हो सकता है ?

- भावेश मेरजा

१९०१ ई० के अन्तिम दिन थे । स्वामी विवेकानन्द जी का स्वास्थ्य अत्यन्त चिन्ताजनक था । अब उनका मात्र ६-७ महिनों का जीवन शेष रहा था । (देहावसान : ४ जुलाई १९०२) बेलुड़ मठ में उस समय स्वामी निर्भयानन्द जी नामक विवेकानन्द जी के एक शिष्य भी रहते थे । उनको सन्निपात ज्वर हो गया । उनकी परिस्थिति गम्भीर हो गई । ज्वर १०७ अंश तक पहुँच गया । विवेकानन्द जी अपने इस संन्यासी शिष्य की हालत देखकर बहुत चिन्तित हो गए । अचानक विवेकानन्द जी को जैसे कोई अन्त: प्रेरणा हुई और वे श्रीरामकृष्ण (उनके गुरु) के मन्दिर में दौड़ गए और उनके अवशेषों वाला पात्र धोकर वह पानी अपने रोगी शिष्य को पिलाया । विवेकानन्द जी के जीवनचरित में आगे लिखा है कि - और जैसे चमत्कार हुआ हो ऐसे ज्वर उतर गया, शान्त हो गया । विवेकानन्द जी ने आनन्द में आकर अपने गुरुभाइयों और शिष्यों से कहा कि - देखो श्रीरामकृष्ण का प्रभाव ! वे कौन-सा चमत्कार नहीं कर सकते ? (सन्दर्भ ग्रन्थ : स्वामी विवेकानन्द जीवनचरित्र, पृष्ठ ४३९, प्रकाशक : श्रीरामकृष्ण आश्रम राजकोट, गुजराती संस्करण जून १९६२)

मुझे लगता है उपर्युक्त प्रसंग में श्रीरामकृष्ण परमहंस जी को महिमामंडित करने का प्रयोजन मुख्य है । यह कोई वैज्ञानिक चिकित्सा नहीं है कि किसी मृत व्यक्ति के अवशेषों वाले पात्र को धोकर उस पानी ज्वरग्रस्त व्यक्ति को पिलाने मात्र से ज्वर का शमन हो जाए । विवेकानन्द जी आधुनिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति थे, उन्होंने यूरोप, अमेरिका आदि सुशिक्षित विकसित भूभागों का व्यापक भ्रमण किया था, फिर भी ऐसी अवैज्ञानिक बात में स्वयं विश्वास करे और अपने गुरुभाइयों एवं शिष्यों को भी ऐसी अवैज्ञानिक बात में विश्वास करने के लिए प्रेरित करे यह अति दुर्भाग्यपूर्ण है । जब उनके जैसे प्रसिद्ध आदरणीय महानुभाव इस प्रकार की अवैज्ञानिक बातों को प्रश्रय देते हो तब हमारे देशवासियों में वैज्ञानिक अभिगम (scientific temper) कैसे विकसित हो सकता है और हमारा समाज कैसे अन्धविश्वासों से मुक्त हो सकता है ?

●●●